Himadri

Bio Plantech Co. Pvt. Ltd.

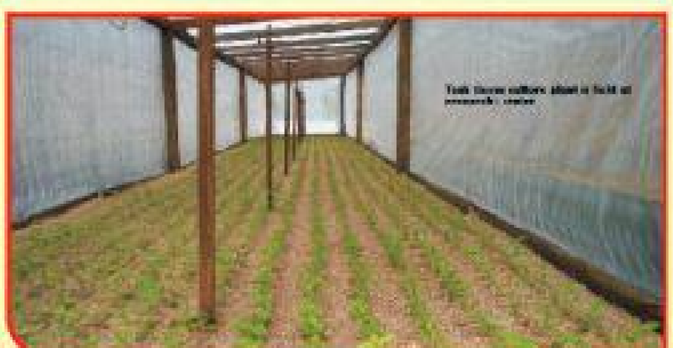

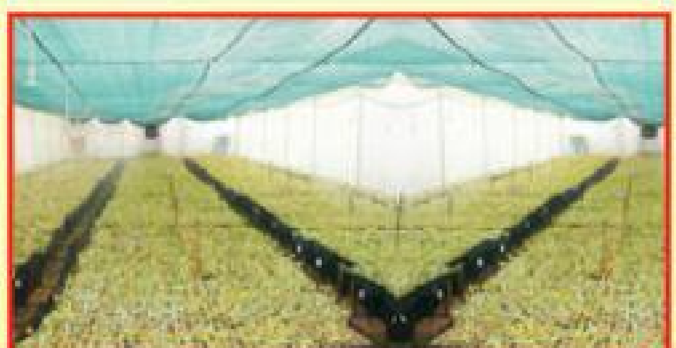

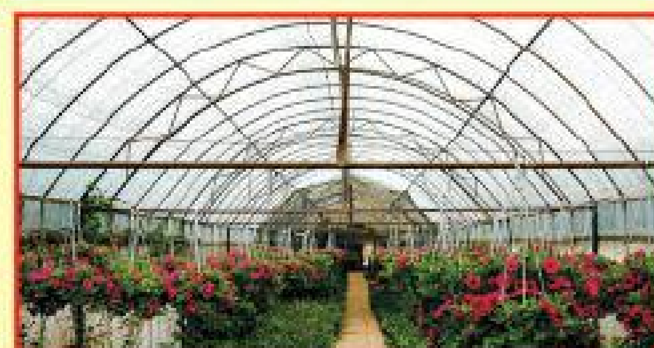

Himadri
Bio Plantech Co. Pvt. Ltd.

विश्वास का प्रतीक

हिमाद्री बायो प्लांटेक कम्पनी प्रा० लि०

* आई. एस. ओ. 9001-2008 के तहत प्रमाणित कम्पनी
* कृषि क्षेत्र में पहली बार फलदार तथा इमारती लकड़ी युक्त हाइब्रिड पोधे।
* उच्च गुणवत्ता युक्त हाइब्रिड सागवान एंव वागवानी के पौधे ने कृषकों में दिलाई अत्याधिक लोकप्रियता।
* उच्च तकनीकी विशेषज्ञों का दल जो किसानों को बेहतर सेवा प्रदान करने के लिये समर्पित है।
* किसानों को समय-समय पर उच्च तकनीकी सेवा प्रदान करके उनके विकास एवं भरोसे का प्रतीक।
* कृषि क्षेत्र में अग्रसर कंपनी।

Himadri
Bio Plantech Co. Pvt. Ltd.

आवश्यकता

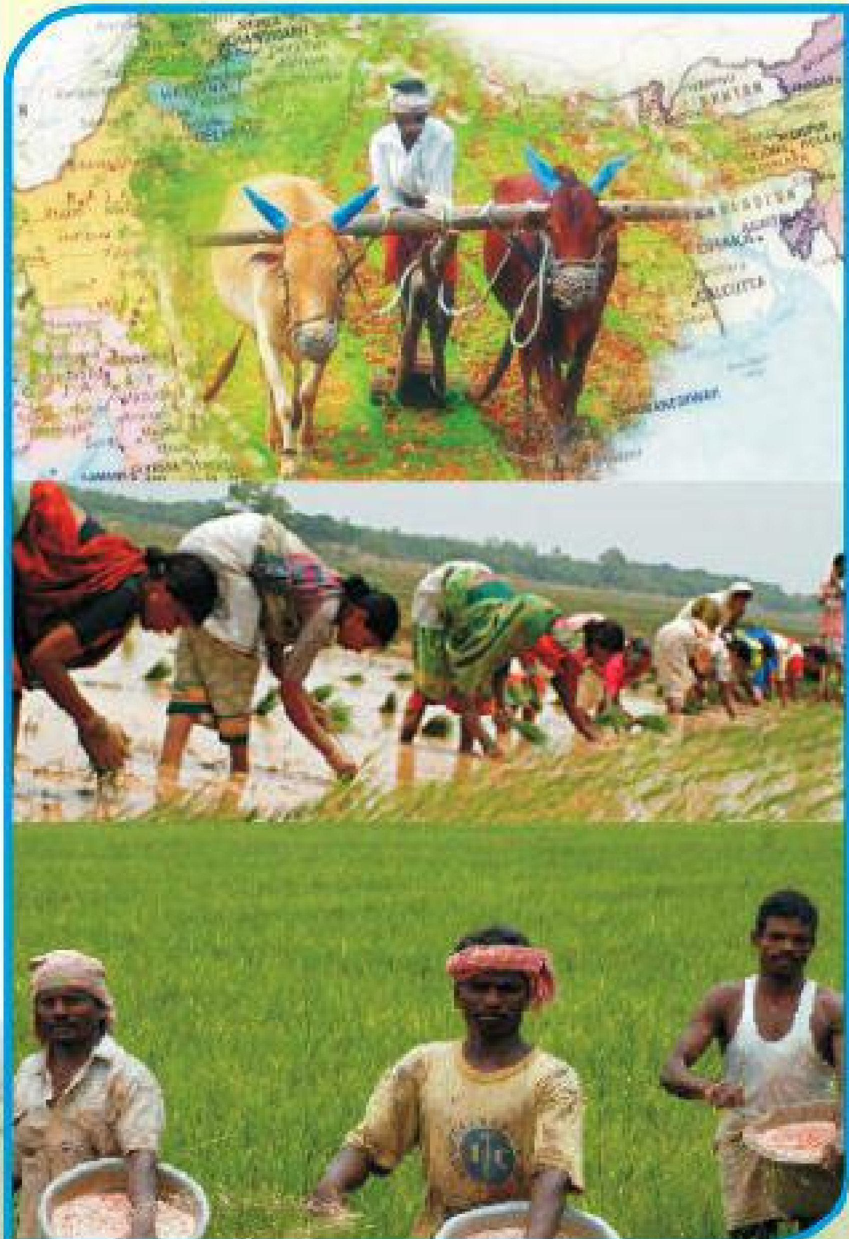

भारतीय कृषि विकास की दिशा में है। 70 प्रतिशत से अधिक लोग कृषि से बाहर आये हैं। किसानों ने अनेक तरह की सांप्रदायिक फसलों को लगाकर उत्पादन तथा आम कम रहने के कारण कृषि करना बन्द कर दिया। इसके साथ–साथ प्रतिकूल वातावरण परिस्थितियां भी एक कारण था।

परन्तु आज के शिक्षित तथा ज्ञानी किसानों ने सांप्रदायिक फसलों के साथ–साथ उत्पादन तथा आय में लगातार समान रूप से लाभ देने वाले गुणवत्ता युक्त लकड़ी पौधों को लगा रहे हैं। रोग प्रतिरोधक होने के कारण इन पौधों को पाल पोस करना भी अन्य पौधों की अपेक्षा आसान है।

इन पौधों से प्राप्त लकड़ी की अच्छी गुणवत्ता एवं जल्दी पैदावार होने से ग्राहक संतुष्ट हैं तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से मांग एवं मूल्यों की वृद्धि दिनों – दिन बढ़ती जा रही है।

Himadri
Bio Plantech Co. Pvt. Ltd.

सामान्य कृषि बनाम बागबानी कृषि में अन्तर

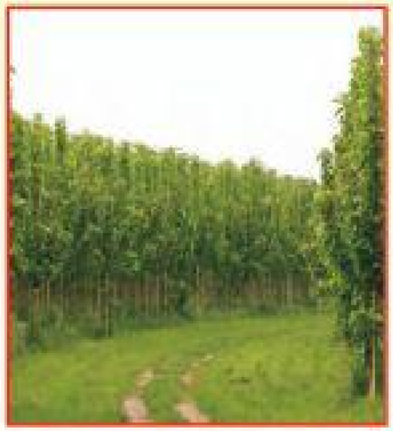

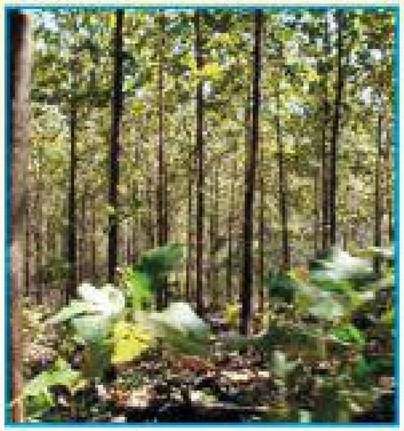

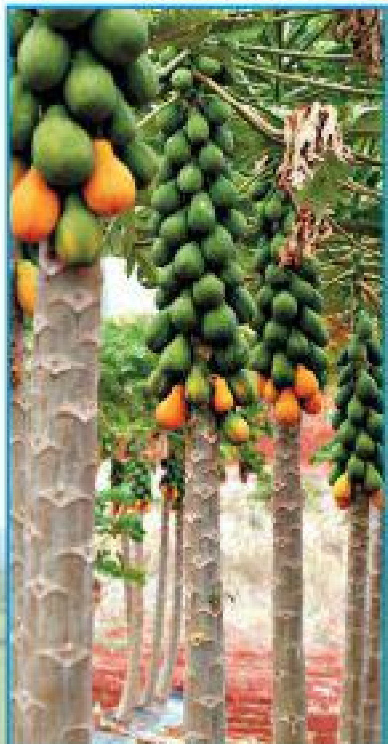

सामान्य कृषि	बागबानी कृषि
* अधिक देखभाल एवं ज्यादा श्रमिकों की आवश्यकता।	* कम देखभाल एवं कम श्रमिकों की आवश्यकता।
* एक सीमित समय में कृषि कार्य कना बेहद जरूरी	* कृषि कार्य के सीमित समय में होने की कोई पाबन्दी नहीं होती।
* हर बार लागत की आवश्यकता पड़ती है	* सिर्फ लगाते समय एक बार लागत की जरूरत।
* कृषि उपज में मन मुताबिक दाम नहीं मिलता।	* कृषक अपने अनुसार भाव तय करता है।
* कृषकों को निश्चित समय में मण्डी जाकर माल बेचना पड़ता है।	* कृषक अपनी सुविधानुसार कभी भी इसको बेच सकते हैं

Himadri
Bio Plantech Co. Pvt. Ltd.

कैसे तैयार करते हैं बेहतर पौधेः–

* देश के विभिन्न राज्यों से प्लस वृक्षों के बीज तथा जड़ का चुनाव करके आधुनिक तकनीक से वैज्ञानिकों की देखरेख एंव ग्रीन हाउस मिस्ट चेम्बर में पौधों को तैयार किया जाता है।
* आधुनिक हाईब्रिड पौधे एवं तापमान सहनशीलता युक्त।
* अत्याधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता।
* पूरी जांच पड़ताल के बाद ही किसानें तक पौधे पहुंचाते हैं।
* हिमाद्री ने देश के विभिन्न राज्यों जैसे उत्तर प्रदेश पंजाब, हरियाणा मध्यप्रदेश, उत्तरांचल आदि राज्यों से जड़ बीज एकत्रित किये जाते हैं।

Himadri
Bio Plantech Co. Pvt. Ltd.

कैसे करें पूर्ति :-

- भारत सरकार भी बागवानी की खेती को बढ़ावा देने की रणनीति बना रही है।
- बागबानी खेती का उत्पादन व्यापक और व्यवसायिक होना चाहिए।
- तैयार अवस्था में पौधों को कटवाने से पहले नये पौधे लगाने की तैयारी अतिआवश्यक है।
- बेहतर से बेहतर गुणवत्ता युक्त बागबानी पौधे हिमाद्री ही उपलब्ध करा रहा है।

Himadri
Bio Plantech Co. Pvt. Ltd.

क्या आप जानते हैं कि बागबानी पौधों में निम्न विशेषतायें होनी चाहिये?

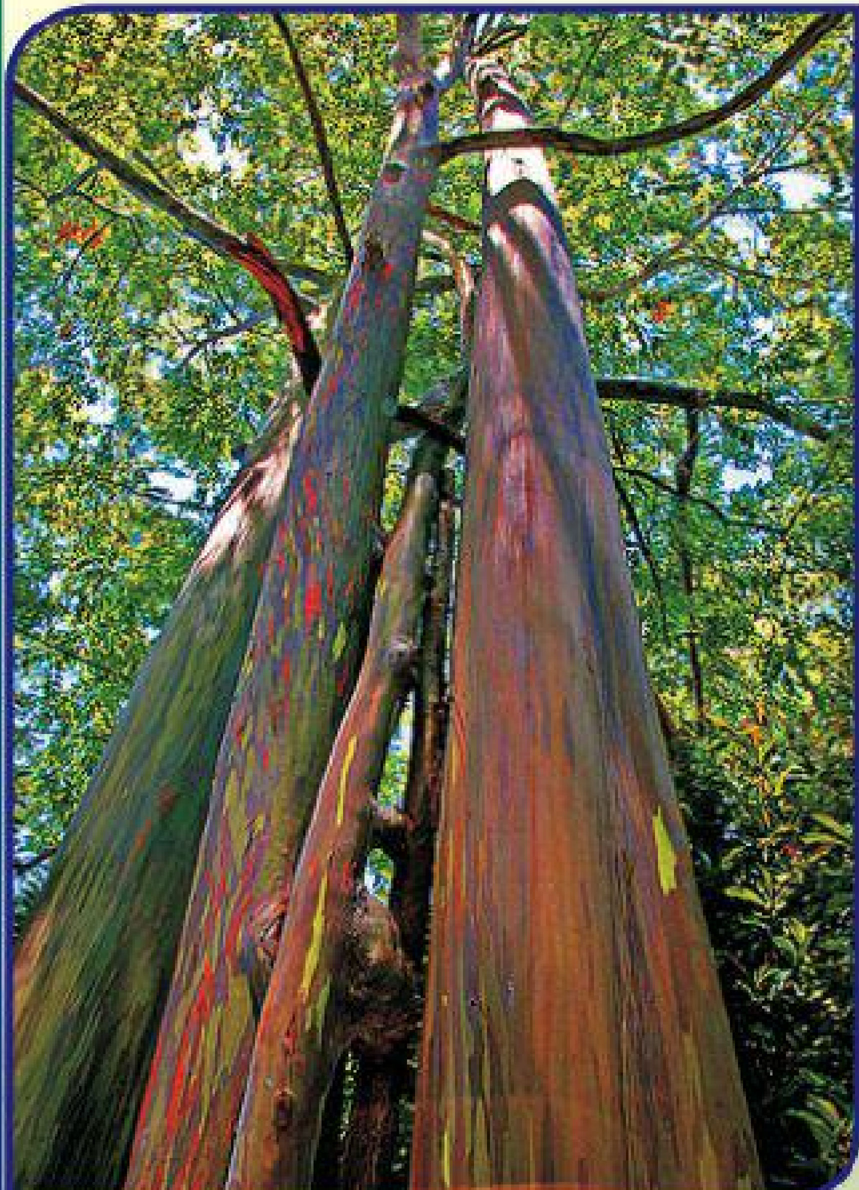

शीघ्र बढ़ने वाला

ऐसे वृक्षों को उगाना चाहिये जो अपेक्षाकृत तेज बढ़ने वाले हों जिससे आप अपने लाभ हेतु उनसे कम समय में उपज प्राप्त कर सकें।

सीधा तना

बागबानी के लिये सीधे तने, कम शाखाओं एवं खाख तराशी सहने वाले वृक्ष प्रजातियों को चयन में प्रथमिकता दी जानी चाहिऐ।

गहरी जड़े

कृषि बागबानी में लम्बी जड़ों वाले वृक्षों से बहुत लाभ होता है यह जड़े भूमि में जाकर नीचे से लाभदायक पदार्थ उपर लाती हैं तो कृषि फसलों को फायदा पहुंचाती है।

Himadri
Bio Plantech Co. Pvt. Ltd.

व्यापारिक बागबानी खेती के अंतर्गत सागवान की खेती क्यों की जाय?

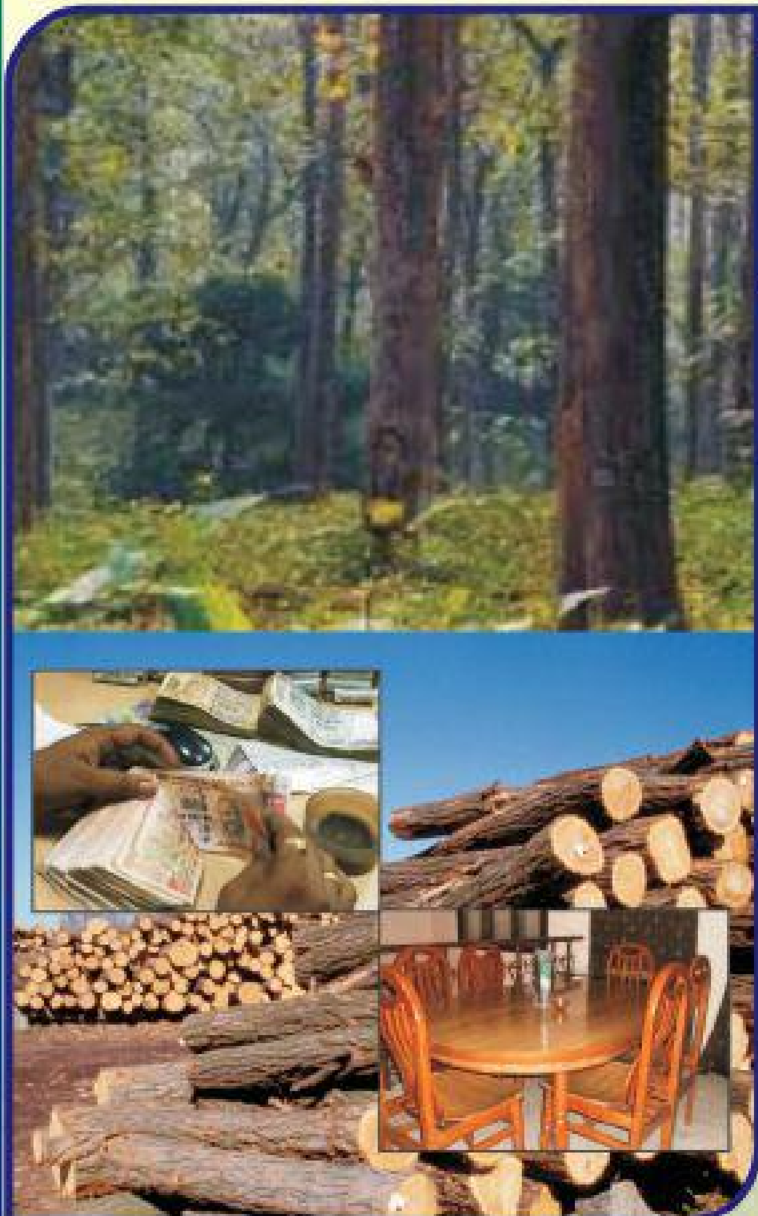

- टेक्टोनोग्रांडिस – इसकी लकड़ी विश्व विख्यात प्रीमियर हाईवुड, अपने चमकीले रंग सुगन्ध व अच्छी गुणवत्ता तथा मजबूती के लिए विश्व्यात है।
- सागवान का उपयोग गृह उपकरण, ऑफिस व सजावटी गृह निर्माण वस्तुओं के लिए अधिक प्रयोग में लाया जाता है।
- सागवान की वार्षिक आवश्यकता 200 मिलियन क्यूविक फीट है। पूरे संसार में सागवान का कुल उत्पादन 20.5 मिलियन क्यूविक फीट है। जबकि भारत में 3.5 मिलियन क्यूविक फीट है परन्तु अभी सागवान की पूर्ति के लिए 176 मिलियन क्यूविक फीट की और आवश्यकता है।
- इसलिए बढ़ती मांग के कारण इसका विपणन बहुत आसान है। उत्पादन के लिए एक बार पौधे लगाकर बड़े पैमाने पर भारी लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

जैसे प्रति एकड़ जमीन से लगभग 51,00,000 से 56,00,000 रूपये की आमदनी की जा सकती है।

Himadri
Bio Plantech Co. Pvt. Ltd.

विशेषताओं से परिपूर्ण है हिमाद्री सागवान

- अच्छे से अच्छा गुणवत्ता युक्त सागवान केवल हिमाद्री ही उपलब्ध करा रहा है।
- पौधे की अच्छी वढबार मध्यम बढवार एवं कम बढ़वार वाले पोधों को प्रथक्करण किया जाता है।
- यह वृक्ष न केवल सीधा व जल्दी बढ़ता है बल्कि ज्यादा से ज्यादा गुणवत्ता युक्त लकड़ी देता है।
- देश के विभिन्न भागों से पोधों को साइज व गुणवत्ता के हिसाब से वर्गीकृत कर एक समान बढ़ने वाले पोधों को ही किसानों तक पहुंचाया जाता है।
- आधुनिक बागबानी के एवं कृषि के अनुकूल ज्यादा पैदावार देने की क्षमता रखता है।

Himadri
Bio Plantech Co. Pvt. Ltd.

सफेदा की खेती क्यों आवश्यक है?

- सफेदा दुनियां के कोने-कोने से चुनी गई किस्मों पर हुये अनुसंधान के बाद एक बेहतर किस्म तैयार की गई है।
- यह रोपण के बाद से ही रिंग फोर्मेशन बिधि द्वारा बढ़ना प्रारम्भ करता है। रिंग फॉर्मिशन की वजह से मुख्य तथा से बहुत कम शाखायें देकर जल्दी तैयार होती हैं।
- यह 4 से 5 साल में तैयार होकर 70 से 80 फीट लम्बाई 6 से 7 फीट मोटाई देता है।
- रिंग फॉर्मेशन की वजह से प्रकृतिक आपदाओं से कोई क्षति नहीं होती है।
- रिंग फॉर्मेशन की वजह से यह अन्दर से बिल्कुल ठोस एंव भारी वजनीक और चकमीली लकड़ी देता है।
- इसका उपयोग प्लाई बोर्ड, फर्नीचर, खेलकूद आदि के उपकरण बनाने में किया जाता है।
- एक एकड़ में एक बार सफेदे के पौधे लगाकर बड़े पैमाने पर भारी से भारी लाभ 14 से 16 लाख रूपये प्राप्त कर सकते हैं।

Himadri
Bio Plantech Co. Pvt. Ltd.

पोपूलर – G-48 एवं उदय W-22 की खेती क्यों आवश्यक है?

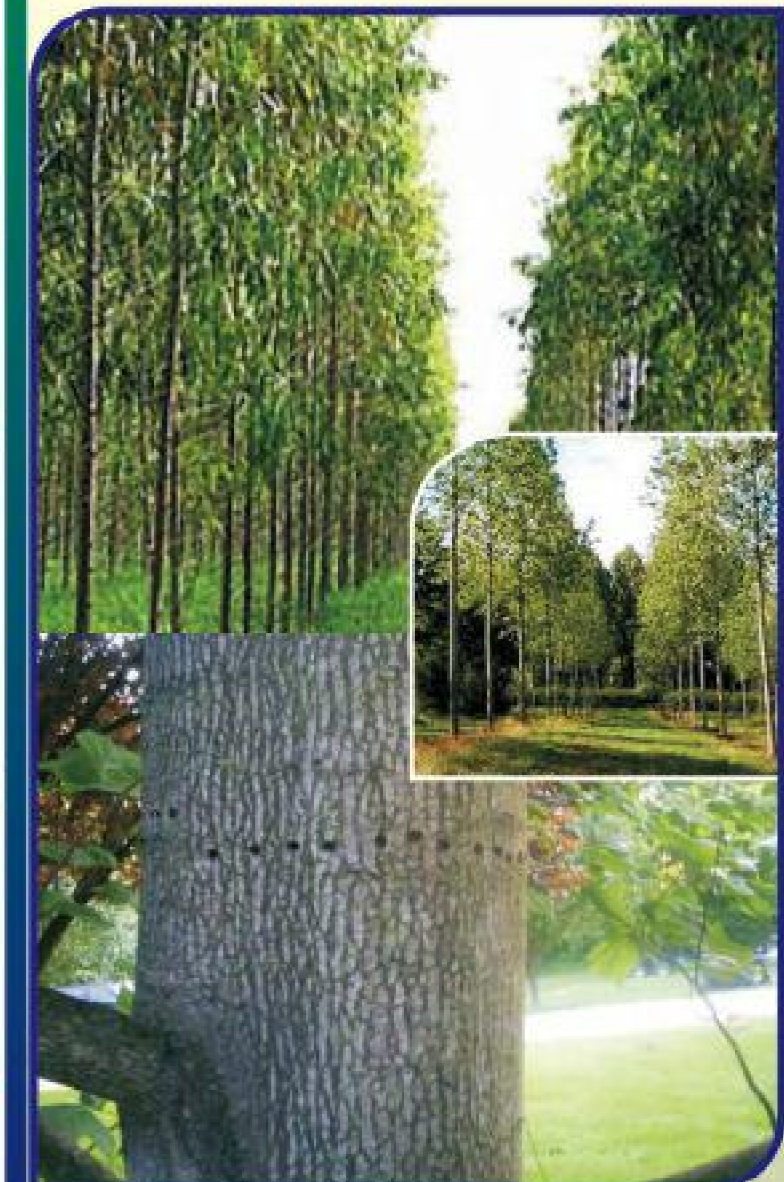

- G-48 एवं W-22 पोपूलर की दुनिया की सर्वश्रेष्ठ प्रजाति है। यह वैज्ञानिकों की देखरेख में मिस्त चैम्बर एंव ग्रीन हाउस में तैयार की जाती है।
- यह इस तरह तैयार किया जाता है जो शुरू से रिंग फॉर्मेशन विधि द्वारा बड़ा होता है।
- रिंग फॉर्मेशान की वजह से मुख्य तना से बहुत कम शाखायें देकर 3-4 वर्ष में 70 से 80 फीट, लम्बाई 5 से 5.5 फीट मोटाई ले लेता है।
- इसका उपयोग खेलकूद के सामान , प्लाई बोर्ड, माचिस की तीली आदि के इस्तेमाल में लाया जाता है इससे बिक्री करना आसान है। एक एकड़ में एक बार में पोपूलर के पौधे लगाकर उसे 4 साल में अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं 18,00,000 से 20,00,000 लाख रूपये।

Himadri
Bio Plantech Co. Pvt. Ltd.

पपीता की खेती क्यों की जाय?

- जर्म प्लाज्म की शुद्धता को परखने के बाद उच्च बीज को स्वीकृत किया जाता है।
- यह ऐसे बीजों का चुनाव करते हैं जिसमें नर प्रजाति बहुत कम पायी जाती है।
- इसका मुख्य तना रिंग फॉर्मेशन के कारण अन्दर से ठोस व मजबूत होता है जिस पर प्रकृतिक आपदाओं का प्रभाव नहीं पड़ता है।
- यह रोपन के 5 से 7 महीने के बाद ही फल देना शुरू कर देता है। यह 6 साल तक लगातार फल देता रहता है।
- फल का मुख्य उपयोग मुरब्बा व खाने के लिये अधिक प्रयोग में लाया जाता है।
- पपीते का अधिक उपयोग होने तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार होने से मांग व मूल्यों में दिनों-दिन बढ़ोतरी होती जा रही है।
- एक बार एक एकड़ में पपीते के पौधे लगाकर बड़े पैमाने पर भारी से भारी लाभ प्राप्त कर सकते हैं।
- जैसे एक एकड़ में 12 से 13 लाख रूपये

Himadri
Bio Plantech Co. Pvt. Ltd.

आखिर हिमाद्री के पौधे ही क्यों?

- अच्छी किस्म के हाइब्रिड गुणवत्ता युक्त पौधे।
- जर्म प्लाजम की शुद्धता को परखने के बाद स्वीकृत किया जाता है।
- आधुनिक हाइब्रिड पौधे।
- भारत के कौने-कौने से चुनी किस्मों पर हुए अनुसंधान के बाद बेहतर किस्म तैयार करती है।
- जड़ बीज ग्रफिंग के बाद एक बेहतर किस्म तैयार करना।

Himadri
Bio Plantech Co. Pvt. Ltd.

हिमाद्री के पौधे खरीदने वाले किसानों के लिये आकर्षक प्रस्ताव

- पौधों को आप के घर तक मुफ्त में पहुंचाने की सुविधा।
- इस विशेष प्रस्ताव द्वारा 100 प्रतिशत मरे हुए पौधों को मुफ्त में वांटा जाएगा।
- पौधे खरीदने वाले किसानों को तीन साल तक मुफ्त में आवश्यक तकनीकी सलाह अपने कृषि अधिकारियों द्वारा दी जायेगी।
- इस सुनहरे अवसर को मत खोइये, सोचिए और तुरंत हिमाद्री के पौधे लगाइए।

आम की खेती क्यों आवश्यक हैः-

- आम हर प्रकार की मृदा में उगाया जा सकता है आकर्षक रंग, स्वाद व सुगंध होने के कारण पके आम की खपत लगभग 12 किग्रा० प्रति व्यक्ति है।
- इसको हाइब्रिड पोधों को तैयार किया गया है। यह लगाने के 2 साल बाद फूल देता है। जिसे घुटाकर अलग कर देते हैं। तथा 3 साल बाद पहली फसल के रूप में 50-55 कि ग्रा० प्रति पोधा पेदावार व 5 साल के बाद 6-8 कुन्टल तक पैदावार 50-60 साल तक ले सकते हैं।

किस्में

बम्बई हरा : यह अगैती किस्म है फल मध्यम आकार का अण्डाकार व पकने पर हरा पन लिये होता है।

दशहरी : यह सबसे लोकप्रिय किस्म है। आकार अण्डाकार रंग हरा-पीला सुगंध युक्त व मीठा होता है।

आम्रपाली सी-63 : यह नियमित फल वली किस्म है। व बहुत लोकप्रिय हैं यह दशहरी व नीलम किस्मों के संयोग से विकसित की गई है।

लगंड़ा जी -54 : फल बड़ तथा पकने में हरा पन होता है, गुदा, सुंधयुक्त मीठा होता है।

चौसा सी -48 : यह पिहेती किस्म है। पका फल बड़े आकार का हरा-पीला होता है तथा गूदा मीठा व सुंगध युक्त होता है।

अन्य : रटौल, चौसा, फजरी, रामकेला, मल्लिका, आदि

अमरूद की खेती क्यों की जाये?

- यह प्रत्येक प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है। इन्हें आधुनिक तकनीक से हाइब्रिड रूप दिया गया है। सेवन के दो साल में ही फल देना शुरू कर देता है। जिसे तोड़ कर साफ कर दिया जाता है
- तथा तीसरी साल में पहली फसल के रूप में 60-70 कि.ग्रा० प्रति पौधा पैदावार ले सकते हैं व 5 साल बाद 5-7 कुन्टल तक की पैदावार 25-30 साल तक ले सकते हैं।

किस्में

इलाहाबादी सफेदा 33 : यह सबसे उत्तम किस्म है इसकी पैदावार 550 से 630 फल प्रति पौधा है।

सरदार (लखनऊ-49) : व्यवसायिक दृष्टि से यह जाति उत्तम है। पैदावार 500 - 600 फल प्रति पौधा।

सेबनुमा अमरूद : रंग सिन्दुरी, खुरदुरा गूदा पीला पन लिये सफेद मीठा और हल्की सुगन्ध जाड़ों की फसल पर ही आता है।

वेहट कोकोनट : शाखाएं बहुत होती हैं। पैदावार अच्छी होती है। फल का आकार बड़ा छिलका हरे नीले रंग का तथा गुदा सफेद और खटासयुक्त मीठा होता है।

सविया 78 : यह एक उत्तम किस्म है तथा अच्छी पैदावार के लिये जानी जाती है

आंवला (चकैया, फ्रन्सिस, नरेन्द्र आंवला 4,7 तथा एफ 52)

यह व्यावसायिक जातियां हैं जो भारी से भारी लाभ देने में सक्षम हैं। यह रोपन के 2 साल में तैयार होकर फल देने लगता है। जो कि तोड़कर अलग कर दिये जाते हैं। तथा 3 साल बाद 70 से 80 किलो तथा 4-5 साल बाद 5-6 कुन्टल प्रति पौधा पैदावार देता है। यह बलुई भूमि के अतिरिक्त सभी प्रकार की भूमि में पैदा हो जाता है।

पपीता - (FC-75)

यह शीघ्र बढ़ने एवं फल देने वाला हाईब्रिड पौधा है। इसमें केवल नर जातियों का चुनाव किया है। यह 7 महीनें बाद 70-80 किलो ग्राम तथा 5-7 महीने बाद 2 से 3 कुन्टल प्रति पौधा 5 साल तक पैदावार देता है।

कटहल : (P280)

यह 3 से 4 साल बाद ही 80-90 कुन्टल तथा 4 से 5 साल बाद 12 से 14 कुन्टल तक फसल देता है। एक अन्य फसलों की तुलना में 40 दिन पहले तैयार हो जाता है।

बेरिया : (WR 33)

यह पौधा उसर जमीन के लिये उपयुक्त है। यह दो साल बाद तैयार होकर 80-90 किलो तथा 3-4 साल बाद 5-7 कुन्टल प्रति पौधा पैदावार देता है

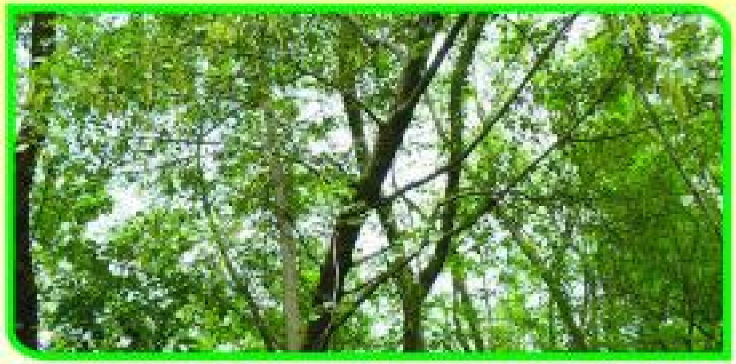

शीशम :-

शीशम भारत की सबसे अच्छी लकड़ियों में से एक है। उन्हें आधुनिक तकनीक से हाइब्रिड रूप दिया गया है। इसको खेत में बड़ी सरलता से लगाया जाता है। यह अन्य पौधों की तुलना में 1 साल पहले तैयार होता है।

बेल पत्थर :-

आधुनिक अनुसंधान के बाद एक ऐसी किस्म जो कि रोपन के 3 साल बाद ही पहली फसल के रूप में 2 से 2.5 कुन्टल तथा 4 साल बाद 15–17 कुन्टल प्रति पौधा फसल 55–60 साल तक ले सकते हैं।

सेमल गद्दा एवं सेमल : (RW -55)

इसकी अधुनिक प्रजातियों के अन्तर्गत दो प्रकार की किस्में पाई जाती हैं। एक कांटेदार तथा एक कांटे सहित परन्तु समय व पैदावार लगभग बराबर तथा 7 से 8 साल में तैयार होकर लम्बाई 40 – 45 फिट तथा 4.5 से 5 फिट गोलाई में मोटाई हो जाती है तथा पूर्ण रूप से तैयार होकर 12 से 14 कुन्टल तक लकड़ी देता है।

किन्नू – (WR1)

यह बहुत तीब गति से बढ़ता व फैलता है, तथा 3 साल बाद ही 60–80 किलोग्राम तथा 4–5 साल बाद 3–4 कुन्टल प्रति पौधा पैदावार देता है।

Himadri
Bio Plantech Co. Pvt. Ltd.